पँचम अध्याय

उपसंहार

पंचम अध्याय

उपसंहार

पंचम अध्याय

उपसंहार

आठवें दशक की बहुचर्चित एवं अग्रणी लेखिका के रूप में श्री मृदुला गर्ग जी ख्याति प्राप्त हैं । मृदुला जी ने अब तक पाँच उपन्यास लिखे हैं । आप के ` चित्तकोबरा ` एवं ` अनित्य ` ने अपनी नव्यता के कारण हिन्दी साहित्य में जयघोष किया । परंपरागत कथ्य और शिल्प के मानों चुनौती देकर मृदुलाजी ने नये आयाम प्रस्तुत किये । इन दो उपन्यासों ने मृदुला जी के कथाकार की वह छबि बनाई कि जो नारी के यौन अनुभवों, यौन तथा प्रेम विषायक आधुनिक जीवन-दृष्टि को अपनी रचनाओं में, खुलेपन सेचित्रित करती हैं । ` कितनी कैदें ` यह कहानी सन् १९७२ के ` कहानी ` पत्रिका के नववर्षांक में पुरस्कृत हुई । इसी कहानी ने मृदुलाजी को कथाकार के रूप में हिन्दी साहित्य-संसार के सम्मुख स्थापित किया । इसके अतिरिक्त मृदुला जी ने दो नाटक भी लिखे हैं । इस प्रकार मृदुला जी ने हिन्दी कथा-साहित्य को अपना महत्वपूर्ण योगदान देकर अपने लिए सुनहरा पन्ना रिज़र्व किया है ।

मृदुला जी के उपन्यासों में जो समस्याएँ उठी हैं, वो सामान्यत: मनोवैज्ञानिक क्षेत्र की हैं । मृदुलाजी ने मनोवैज्ञानिक शैली में उनका निरूपण किया है । जाने-अनजाने आप पर मनोविश्लेषणात्मक सिध्दांतों का काफी प्रभाव दिखायी देता है । मृदुला जी की भाषा, शब्द-विन्यास, शिल्प संवाद आदि में प्रयोगशीलता दृष्टव्य है, जो आप को समकालीन लेखकों से अलग करती है । मृदुला जी उन लेखिकाओं में से हैं, जिन्होंने ईमानदारी से आधुनिकता को स्वीकारा है । मृदुला जी ने कृतिकार की ईमानदारी के साथ जीवनानुभव की ईमानदारी को कथा में उतारते हुए जीवन के वर्जित सत्यों को भी जिस साहस

लेकिन सहजता के साथ प्रस्तुत किया है, हमें इसका सबूत `उसके हिस्से की धूप`, `अनित्य` तथा `मैं और मैं` आदि उपन्यासों मिलता है।

मृदुला जी एक सशक्त यथार्थवादी कथाकार के रूप में प्रसिद्ध हैं। मृदुला जी ने जीवन की अनेक सच्चाईयों को आत्मसात करके उन्हें अपनी रचनाओं में बेबाक ढंग से चित्रित किया है और विद्रूपता भरे यथार्थ से सीधा साक्षात्कार किया है। मृदुला जी ने आधुनिक जीवन की अनेक समस्याओं को प्रस्तुत किया है। आधुनिक जीवन जी लेने की तमन्ना में शून्य से टकराने की बेमानी कोशिश, जीवन की यांत्रिकता और एकसरता से पैदा हुई ऊब एवं रिक्तता, जिंदगी की भीड़ में अपने स्वतंत्र अस्तित्व की खोज की भटकन, संबंधों की अर्थहीनता, जड दाम्पत्य जीवन, अजनबीपन, निरंतर अकेले होते जाने की कचोट आदि आयामों को मृदुलाजी ने अपने नारी-पात्रों के जरिये मुखरित किया है।

मृदुला जी के उपन्यासों के नारी-पात्रों को देखने-परखने के बाद हम यह कह सकते हैं कि नारी का बड़ा ही मार्मिक तथा स्वाभाविक चित्रण किया है। नारी-जीवन का बहु-आयामी चित्रण मृदुला जी की अपनी विशेषता रही है। घटित अनुभव चाहे खुद का हो या दूसरे का, पर उससे उत्पन्न मानवीय पीड़ा खुद की होती है, शायद इसीकारण मृदुलाजी के नारी-पात्रों में प्रामाणिकता का अहसास बड़ी गहराई के साथ होता है। मृदुला जी ने आधुनिक नारी-जीवन की सामाजिक, आर्थिक, पारिवारिक तथा मनोवैज्ञानिक स्थिति और समस्याओं को तलस्पर्शी दृष्टि से देख-परख कर स्त्री-पुरुष संबंधों की सूक्ष्मताओं को बड़े ही कौशल के साथ अंकित किया है। लेखिकाने इन संबंधों की भ्रमपूर्ण धारणाओं, कल्पनाओं एवं खोखली आदर्शवादिता की पुरुष परायण स्थितियों को तोडा है और अपेक्षाकृत यथार्थ और स्वाभाविक जीवन स्थितियों को ठोस अनुभूतियों के परिप्रेक्ष्य में प्रस्तुत करने का प्रयास किया है।

मृदुला जी ने मुख्यत: आधुनिक नारी-जीवन को बड़े आग्रह के साथ चित्रित किया है। अपने अनुभव-वृत्त के आधार पर लेखिकाने वर्तमान नारी की सामाजिक

नियति और मानसिकता को बड़े नजदिकता से देखा है और चित्रित किया है। आधुनिक नारी जो प्राचीन एवं आधुनिक संस्कारों के बीच पिस रही है अपने संस्कारों के कारण वह अपनी सीमा लाँघ सकने में खुद को असमर्थ पाती है। यद्यपि कभी-कभी विद्रोह कर अपने सीमा वृत्त को तोड़ कर बाहर निकलती भी है, तो उसका व्यक्तित्व विघटित हो कर बिखर जाता है। पर कभी-कभी अपने स्वतंत्र व्यक्तित्व के निर्माण में सफल भी होती है।

मृदुला जी स्वयं नारी है। पुरुष नारी की मन:स्थिति को कल्पित करता हुआ कितना भी यथार्थ परक लेखन क्यों न करे पर उसमें स्वयं अनुभूत सत्य का ताप नहीं आ पाता है। मृदुला जी ने स्त्री-पुरुष के कोमल रूप और सूक्ष्म क्षणों को बारीकी से पकड़ कर नारी के अंतर्जगत् की हर एक हलचल को अपनी लेखनी से स्पर्श किया है। आज के नारी की बदलती हुई मान्यताओं, विश्वासों परिस्थितियों तथा आचार-विचारों को ध्यान में रखकर नारी का मार्मिक चित्रण करने में दूर तक सफलता पायी है। हर एक पाठक का इन नारी-पात्रों से सहज लगाव हो जाता है। आज तक नारी का शोषण पुरुष के हाथ में होता रहा है, उसे कुछ हद तक ये नारी-पात्र तोड़ते हैं।

आधुनिक नारी की समस्याओं को चाहे वह यौन-समस्या क्यों न हो, लेखिका ने बड़े ही बेबाकी तथा खुलेपन से चित्रित करके, साहस का परिचय दिया है। नारी-समस्याओं की ओर नये अंदाज से देखने के कारण नारी-मन की मनोवैज्ञानिक गुत्थी को पूर्ण उन्मुक्तता तथा स्वच्छन्दता से खोल सकने में पूरी तरह सफल रही है, आप का यह नया अंदाज एक उपलब्धि के रूप में रेखांकित किया जा सकता है। नारी पुरुष के संबंधों को नजदिकता से देख कर मानवीय संबंधों और आत्मीय रिश्तों की ऊष्मा रिसने का बड़ा सशक्त चित्रण कर इन तमाम संबंधों और रिश्तों पर दुबारा सोचने के लिए विवश किया है

प्रस्तुत प्रबन्ध के आरंभ में कुछ प्रश्न उठ खड़े हुये थे, उनके निष्कर्ष निम्नानुसार निकाले हैं ---

(१) मृदुला जी के उपन्यासों में प्रमुखत: आधुनिक नारी के भाव-विश्व का चित्रण हुआ है । इसीकारण आप के उपन्यासों में आधुनिक नारी-पात्र दिखायी देते हैं । यह यथार्थ है कि आज आधुनिक नारी का एक स्वतंत्र वर्ग निर्माण हो चुका है । उनकी अपनी एक खास अलग ढंग की जिंदगी होती है । उनकी कुछ अपनी समस्याएँ होती हैं और उनके समाधान भी होते हैं । मृदुला जी के उपन्यासों ऐसी आधुनिक नारी का चित्रण हुआ है, जो आज के प्रगतिशील, पाश्चात्य प्रभाव से युक्त, नागरी संस्कृति में पली हुई शिष्ट एवं सभ्य समाज की इकाई है । वह सभी माइने में बीसवीं सदी की आधुनिक नारी है । उसके निश्छल आचार-विचारों पर उसके परिष्कृत और उदात्त अंतरंग की झलक दिखाई देती है । यह आधुनिक नारी उच्च-मध्य वर्ग की प्रतिनिधि नारी है, उच्च-शिक्षित है, परिष्कृत विचारों की बुध्दिवादी नारी है, जो अपनी स्वतंत्र अस्मिता और सुख की नारी-सुलभ परिकल्पना को पाने की तमन्ना से भरी है । नौकरानी के रुप में 'स्वर्णा' का चित्रण भी दृष्टव्य है ।

(२) मृदुला जी के नारी-पात्रों को देखने के बाद उनकी कुछ खास विशेषताएँ हमारे सामने आती हैं । आप के नारी-पात्र विविधता तथा रोचकता लिए हुए हैं । मृदुला जी ने उच्च-मध्य वर्ग की विवाहित नारी की मानसिकता को नजदिकता से देखा है । आप की नारी विद्रोही है, जो बंधी-बंधायी व्यवस्था या मर्यादा या धारणा को तोडने के लिए संकल्पित है । मृदुला जी की नारी केवल माता न हो कर आर्थिक, सामाजिक और राजनीतिक क्षेत्र की इकाई है । आप के नारी-पात्र अपने स्वतंत्र अस्तित्व एवं व्यक्तित्व के खोज में रत दिखाई देते हैं, इसी खोज में उनका व्यक्तित्व विघटित होता दिखायी देता है । ये नारी-पात्र मानसिक द्वंद्व से ग्रस्त दिखायी देते हैं, इसी उधेडबुन में अपना जीवनयापन करते दिखाई देते हैं । लेखिकाने इन नारी-पात्रों को स्वयं जी कर उजागर किया है, इसीकारण इनका बडा ही प्रामाणिक चित्रण दिखाई देता है । संक्षेप में मृदुला जी के नारी-पात्रों की यही विशेषताएँ दिखाई देती हैं ।

(३) मृदुला जी के इन नारी-पात्रों में विकास-क्रम दिखाई देता है । मृदुला जी के सर्जक व्यक्तित्व की खोज-यात्रा उनके पात्रों के विकास क्रम में व्यक्त होती है । आप के नारी-पात्र उत्तरोत्तर विकासशील होते दिखाई देते हैं । `वंशज` के नारी-पात्र रेवा तथा सविता आदर्श भारतीय नारियाँ हैं । `उसके हिस्से की धूप` की नायिका मनीषा में व्यक्तिगत स्वतंत्रता का आग्रह है, नैतिक साहस है, इच्छा-शक्ति है, व्यक्तिगत रूप में कुछ कर गुजरने की तमन्ना है, पर सामाजिक उत्तरदायित्व का ठोस धरातल कहीं भी दिखायी नहीं देता । `चित्तकोबरा` की नायिका मनु के चरित्र में उद्दाम प्रेम, स्वतंत्र अस्मिता और सामाजिक उत्तरदायित्व का बड़ा स्पृहणीय संतुलन दिखाई देता है, जो नैतिक साहस और उदारता को ठोस धरातल प्रदान करता है । इसीप्रकार एक को छोड कर दूसरे के साथ शारीरिक संबंध स्थापित कर लेने से प्रेम का निर्वाह हो जाए, यह जरूरी नहीं है क्योंकि इससे भोग-लिप्सा भले ही शांत हो पर आत्म-तुष्टि नहीं होती, यह तथ्य `उसके हिस्से की धूप` की नायिका मनीषा ने अंत में ग्रहण किया और इसी तथ्य से `चित्तकोबरा` की नायिका मनु के मानस की कथा-यात्रा आरंभ होती है । `अनित्या` की प्रज्ञा, काजल, संगीता आदि नारी-पात्र अपनी सामाजिक जिम्मेदारियों के प्रति काफी सजग दिखायी देते हैं । साथ ही सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक क्षेत्र में भी अपना महत्व रखते हैं । पात्रों की यह व्यवहारिक विकासशीलता निश्चय ही मृदुला जी के साहित्य का शुभ-लक्षण माना जाना चाहिए ।

(४) मृदुला जी नारी के प्रति अपना विशेष दृष्टिकोण रखती हैं । उनका यह दृष्टिकोण केवल सहानुभूतिशील न हो कर संवेदनशील, परिष्कृत, उदार एवं प्रगतिवादी भी है । मृदुला जी यह मानती हैं कि नारी का भी अपना स्वतंत्र अस्तित्व एवं व्यक्तित्व है । उसकी अपनी अलग सत्ता है । पुरुष नारी से बढ़कर नहीं है, अत: पुरुष से नारी की मुक्ति बिल्कुल बेमानी लगती है । संपर्क में आये केवल चार-छ: पुरुषों से नारी की मुक्ति, यह मुक्ति नहीं है । नारी की मुक्ति तो सामाजिक,

आर्थिक एवं राजनीतिक अव्यवस्था से होनी चाहिए । आज की नारी अपनी समस्याओं का हल खुद ढूँढ़ सकती हैं तथा आत्मसम्मान, गौरव और स्वाभिमान के साथ जी सकती हैं । मृदुला जी नारी के भविष्य के प्रति आशातीत हैं और यह एक विधायक शुभ-लक्षण हैं ।

अनुसंधान की नई दिशाएँ ---

मृदुला जी के नारी-पात्रों का मैंने अनुसंधानात्मक अध्ययन इस लघु-शोध-प्रबन्ध में किया हैं । मुझे लगता हैं कि मृदुला जी के उपन्यास-कला पर अनुसंधानात्मक कार्य हो सकता हैं । साथ ही 'चित्तकोबरा' उपन्यास पर भी स्वतंत्र रूप से विचार किया जा सकता हैं